मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख सलंग अंक १९१ जून -२०२३

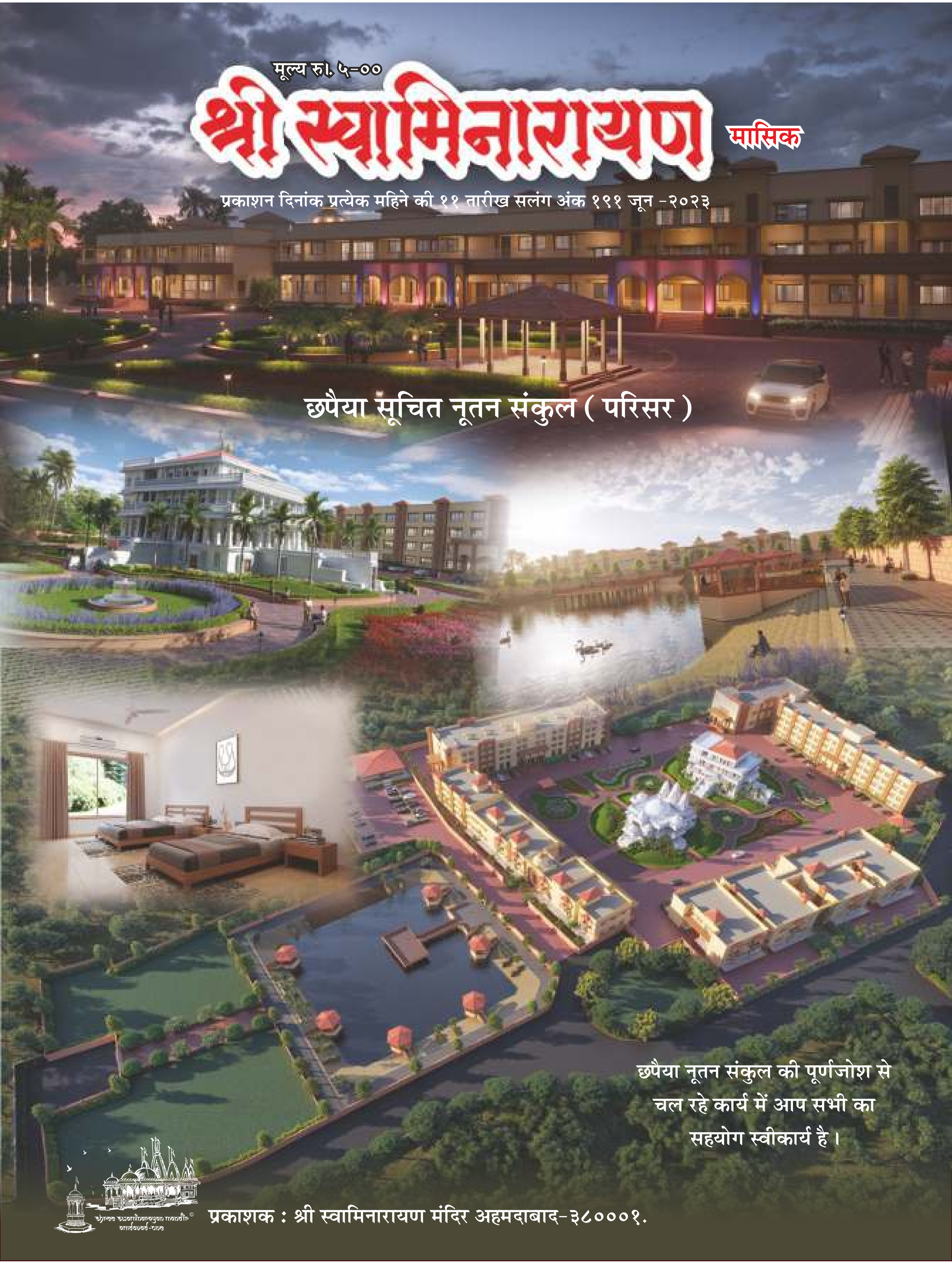

छपैया सूचित नूतन संकुल (परिसर)

छपैया नूतन संकुल की पूर्णजोश से चल रहे कार्य में आप सभी का सहयोग स्वीकार्य है ।

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

गोविंदपुरा गाँव में नये मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री

हर्षद कोलोनी (बापुनगर) मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री।

बिलिया गाँव में रजत जयंती के अवसर पर सभा में दर्शन देते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते प.पू. लालजी महाराजश्री।

जलौया (कपडवंज) गाँव में नवीन मंदिर के शिलान्यास करते प.पू. आचार्य महाराजश्री।

छपैया में पाटोत्सव के अवसर पर श्री घनश्याम बाल चरित्र कथा।

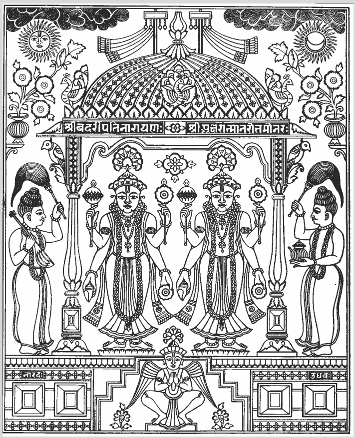

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १६ ● अंक : १९१ ● जून-२०२३

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	भूज श्री नरनारायणदेव के द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप के मुख से आशीर्वाद के वचन	०६
०४.	श्री स्वामिनारायण भगवान की जन्मभूमि छपैयाधाम के परिसर का नवीन निर्माण द्वारा विकास	१२
०५.	पाटण	१३
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१६
०७.	भक्ति सुधा	१६
०८.	सत्संग समाचार	१८

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

संवत २०७९ के मध्य अपने देश और गुजरात में प्राय: बिना मौसम की वर्षा तथा अभी भी बरसात हो रही है । भगवान के लीला का कोई पता नही लगा सकता है । श्रीहरि जो करे । ''वह हमारे हित में है ।'' ऐसा हमें स्वीकार करना चाहिए । अब अषाढ सुद एकादशी से चातुर्मास प्रारम्भ हो रहा है । अपने श्रीहरि के सभी आश्रितो को शिक्षापत्री में भगवान द्वारा लिखा गया है । किसी आठ नियमो में से हमे जो अच्छा लगे । उसे चार मास तक पालन अवश्य करना चाहिए । महाराजने सुगम नियमो का पालन करने को कहे है । जिसका अळश्य पालन करना चाहिए । हमे भगवान का भजन करके श्रेय और मोक्ष को प्राप्त कर लेना है ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०२३)

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर खुशेला (पंचमहल) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।

५-६ श्री स्वामिनारायण मंदिर सरली (कच्छ) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अपने कर कमलो द्वारा पूर्ण किये ।

११-१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर वाडासर (कच्छ) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर (हर्षद कोलोनी) बापुनगर पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

१६-१७ सर्वोपरी छपैयापुर धाम में कथा पारायण के अवसर पर बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर गोविंदपुरा (वेडा) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।

२३ श्री स्वामिनारायण नूतन मंदिर आडेसर (वागड-कच्छ) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।

२४ बीलिया श्री स्वामिनारायण मंदिर का रजत जयंती पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

२६ जलोया (ता. कपडवंज) नूतन मंदिर के भूमि पूजन के अवसर पर पधारना । वहाँ से पोरडा मंदिर में आरती के लिये पधारना ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (मई-२०२३)

७ कडी अनमोलविला श्री स्वामिनारायण मंदिर की शिलान्यास विधि अपने करकमलो से पूर्ण करना ।
कुडासण (गाँधीनगर) कथा पारायण के अवसर पर पधारना ।

९ महादेवनगर गुरुकुल, प्रार्थना मंदिर के उद्घाटन पर पधारना ।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर चांदीसणा (ता. कलोल) पुनः मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा को अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।

२२ जडेश्वर पार्क श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर (आर.सी. टेक्नीकल रोड) घाटलोडिया पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

२७ बीलिया श्री स्वामिनारायण मंदिर रजत जयंती पाटोत्सव पर पधारना ।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

भूज श्री नरनारायणदेव के द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप के मुख से आशीर्वाद के वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

(१) प.पू. बड़े महाराजश्री ता. २३-०४-२०२३ : आदरणीय संतो एवम् प्रिय सत्संगी भाईयो आज की सभा में एंक सुंदर दृश्य देखा । एक दाता ने अपनी जमीन को भुज मंदिर को दस्तावेज प्रदान किया है । उस हरि भक्त को धन्यवाद है । मुझे एक बात याद आई है । महाराज को जब अंग्रेज ने कहाँ आप मंदिर बनाये । हम मंदिर बनाने के लिये भूमि निःशुल्क देगे । उस समय कम्पनी की सरकार थी । महाराजने दस्तावेज माँगा । तब उसने कहा दस्तावेज हमारे अधिकार में नही है । इसके लिये लंदन से रानी की सहमती लेना पडेगा । महाराजने कहा सर्व प्रथम सहमति ले । इसके बाद भूमि स्वीकार करेगे । मंजूरी मिलने के बाद महाराज को दस्तावेज दिये थे । सर एन्ड्रुज और डनलप के हस्ताक्षर वाला दस्तावेज की कापी आज भी अपने म्यूजियम में रखी गयी है। कभी दर्शन करने आये तो हाल नं. ८ में दर्शन करियेगा ।

दस्तावेज महत्वपूर्ण वस्तु है । भुज मंदिर का दस्तावेज भी अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के नाम से हुआ है । मुझे कैसे याद आया । मैं बाहर रहूँ या अहमदाबाद में मैं प्रतिदिन भुज का वृतांत यू-ट्यूब पर रोज देखता हूँ । कई बार स्टेडियम में बैठकर मैच देखने अलावा टी.वी. में मैच देखना अच्छा लगता है । क्योकि टी.वी. में सूक्ष्मता से देखा जा सकता है । दो दिन पहले एक संत ने भुज के संतो अच्युतदासजी स्वामी से लेकर वर्तमान के महंत तक प्रसंशा किये । कि संत अधिक तपस्वी है । त्याग के मूर्ति है । भजनिक है । लेकिन एक बात बताना संत भूल गये । शायद जानबूझकर भूल गये या कुछ कष्ट आने वाला था । इस लिये भुल गये । क्यो भूल गये ? भुज के एक भी संत ने अपना अलग से ट्रस्ट नही बनाया है । अपने नाम का व्यक्तिगत दस्तावेज नही कराये है । अच्युतदासजी स्वामी से लेकर वर्तमान महंत तक किसी के पास स्वतंत्र मंदिर नही है । अपना स्वतंत्र मंदिर भी नही है । यह उनके अच्छे गुण है । मैं संतो को सबसे अधिक गुण (प्रथम) देता हूँ ।

आप आधारानंद स्वामी के ग्रंथ को देखे । इस में स्वामीने वर्णन किया है कि महाराज किसी भी संत को भोजन करने वाले पात्र या पढने वाली पुस्तक के उपर नाम नही लिखने देते थे । कारण ? कुछ दिन के बाद उस वस्तु पर उसका अधिकार भाव जन्म ले लेता है । यह पात्र और पुस्तक मेरी है । वर्तमान समय में सत्संगी मात्र का धन व्यर्थ नही जाये । इस विषय पर सोचना है । अति आवश्यक है । अति आवश्यक है । इसकी जड नरनारायणदेव या लक्ष्मीनारायण देव तक जाता है । इस लिये दान दे जो आप के तथा सम्प्रदाय के हित में हो ।

हमने १९७८ में अमेरिका में आई.एस.एस.ओ. को प्रारम्भ किया । उस समय के संविधान में ऐसा था कि कोई भी सत्संगी विदेश से आई.एस.एस.ओ. के द्वारा भारत में हमारे मंदिर में पैसा भेजे । उसमे टेक्स का लाभ मिलता था । आज नियम का पता नही है । सत्संगी पूछ रहे थे कि हम लोग आई.एस.एस.ओ. के द्वारा मंदिर में धन भेजे तो क्या आप अनुमति दे रहे है । हम बोले कि अवश्य भेजे अहमदाबाद, मूली, जेतलपुर, धोलका, वडताल या गढडा भेजे । आप आई.एस.एस.ओ. उस मंदिर में भेजता । लेकिन हमारे गुरु की सत्संग संस्था में भेजना हो तो भेज दे ? हम सीधे मना कर रहै। जिन लोगो को यह बात अच्छी नही लगी वो लोग उठकर बाहर चले गये ।

भुज के संत अति पवित्र है । इनसे आशीर्वाद प्राप्त करने पर कल्याण होगा । ये संत अधिक धन्यवाद के पात्र है। मैं पद पर था । और हरिस्वरुप स्वामी महंत के पद पर थे । उस समय मैं एक प्रतिष्ठा के अवसर पर आया था । प्रतिष्ठा की विधि लम्बे समय की थी । हमारे लिये एक कुर्सी रखी गयी थी । एक ही कुर्सी थी । हमने स्वामीजी से कहा कि आप वृद्ध है। आप कुर्सी पर बैठे । मैं हाथ पकडकर उन्हे कुर्सी पर बैठादिया । स्वामीजी इतना खुश हो गये कि अपने हाथ में ली माला को

हमारे गले में पहना दिये । आज भी वह माला मैने सुरक्षित रखा है। दूसरी एक बात याद आ रही है। बापूजी कच्छ पधारे थे । आज के समयानुसार उस समय गाडी ए.सी. वाली नही थी । जीप में बैठकर एक गाँव से दूसरे गाँव में जाते थे । मुलीमनोहर स्वामीने बापुजी से कहा, स्वामी आईये हमारे साथ स्वामीजीने कहा कि मै कैसे आप के साथ आंऊ ? बापुजीने कहा कि मैं आपके साथ हूँ । आप गाडी में बैठ जाईये । स्वामीजी गाडी में बैठ गये । ऐसा प्रेम तब भी था । और आज भी है।

द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर गर्मी का समय था ।मै रात दिन धुम रहा था । उसी समय मुरलीमनोहर बिमार थे । उन्हे मुझसे मिलने की इच्छा हुई । भुज से टेलीफोन आया कि स्वामीजी आप से मिलना चाहते है। उस समय रात्रि मे जगकर में भूज मिलने गया । अपने धर्मकिशोर स्वामी खडे होकर मुझे प्रणाम करते है ।मैने एक बार कहा कि स्वामीजी यह अच्छा नही लगता है । आप बड़े होकर दण्डवत करते है । स्वामीजीने कहा कि मैं नरनारायणदेव के गद्दी के आचार्य को दण्डवत करता हूँ। मैं दण्डवत करुंगा तो छोटे-छोटे संत भी दण्डवत करेगे । इसलिये मैं दण्डवत करता हूँ । ऐसे अपने विरले संत थे । आज भी यह परम्परा बनी हुई है। इन संतो के पास जो कुछ भी है । यह नरनारायणदेव भुज का है। इनका व्यक्तिगत कुछ भी नही है।

बापुजी बिमार थे । धाम में जाने के दो-तीन दिन पहले की बात है। बापुजी से मिलने के लिये धर्मजीवनदास अहमदाबाद आये थे । तभी बापुजीने हमसे कहे कि स्वामी मुझे मिलने आ रहेहै। वह दण्डवत करेगे। इस लिये मेरी तरफ से स्वामीजी को उठाकर गले लगालेना । क्योकि मैं अब अशक्त हो गया हूँ। मैं खडा नही हो सकता हूँ। आचार्य, संतो और हरिभक्तो के मध्य ऐसी पारिवारिक भावना एवम् प्रेम यह अहमदाबाद देश की विशेषता है । यह भावना स्थायी रुप से बनी रहे। ऐसी नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना है।

(२) ता. २२-०४-२०२३)श्री मोहन भागवतजी सर संघ संचालकश्री आर.एस.एश. की उपस्थिति) : आपकी (मोहन भागवतजी) की उपस्थिति से हमारे पंडाल में चार चाँद लग गया । हम आप को पसंद करते है। इसलिये कि आप देश के बडे नेता है । हम इसलिये पसंद करते है कि आप भगवान को चाहते है । स्वामिनारायण सम्प्रदाय आचरण का सम्प्रदाय है । शुद्ध आचरण और शुद्ध विचार का सम्प्रदाय है । यह प्राचीन मान्यताओ **(Orthodox)** वाला सम्प्रदाय नही है । २०० वर्ष के समय में विश्वव्यापी सम्प्रदाय बन गया है। एकबार हम लंदन की सभा में उपस्थित थे । वहाँ पर चर्च के धर्माधिकारी लोग आये थे । सभा को देखकर बोले की हमारी सभा में वृद्ध लोग अधिक रहते है । आप की सभा में सभी उम्र के लोग बैठे है। जो चलना भी नही सीखे है। बालक लोग आगे बैठे है।

मुझे एक कहानी याद आ रही है। एक मुगल बादशाह अपने शहजादे को पूरी सेना के साथ राजस्थान पर विजय प्राप्त करने के लिये भेजा । सेना एक खेत पर रुकी । सभी घोडो को खेत में चरने के लिये छोड दिया । एक चारपाई पर वृद्ध बैठा था । सैनिको ने खेत में घोडे चराने के लिये उससे अनुमति चाही । उसने कहा दो खेत छोडकर आप घोडे उसमें चरा सकते है । सैनिक ने कहा ऐसा क्यो ? तब खेत के मालिकने कहा, क्योकि वह खेत हमारे नही है। दूसरे के खेत में आप कैसे घोडे चरा सकते है। यह मेरा खेत है। यह घटना देखकर शहजादेने अपने पिता को पत्र लिखा कि इस देश में ऐसी संस्कृति है। तब-तक इस देश को हम नही जीत सकते है ।

यह हमारी संस्कृति है । स्वामिनारायण संप्रदाय इस संस्कृति की रक्षा करता है। आप देश-विदेश में कही भी जाये ।हमारे बच्चे मंदिर में देव को दण्डवत करते है। हमारे ये संत गाँव-गाँव देश-देश में जाकर संस्कारो का सिंचन करते है। व्यसन मुक्त जीवन जीने की कला सिखाते है। ये सभी अपने परिवार है । इस मूल सम्प्रदाय की स्थापना स्वयं स्वामिनारायण भगवानने स्थापित किया था । इस परम्परा में हम उन्हीं के वंशज है। हमारी छठ्ठी पीढी है। ये प.पू. महाराजश्री सातवे और आठवे लालजी महाराजश्री पहले दिन आकर गये। कल पुनः आयेगे।

जैसा आप का सरनेम है । वैसा आप के गुण है । इस महोत्सव में हम आपका प्रेम से स्वागत और अभिवादन करते

है। आप हमारे प्रत्येक अवसर पर पधारे। इन्ही शब्दो के साथ वाणी को विराम दे रहा हूँ।

(३) ता. २५-०४-२०२३ : कई वर्षो पहले की बात है। मंदिर प्रात: आकर कार्यालय में बैठा था। एक सत्संगि आकर बोले वचनामृत में जो आत्मबुद्धि की बात है। उसे आप हमे समझाये। मैं मंदिर के कार्य मे व्यस्त था। मै कुछ समय बैठने के लिये कह दिया। इतने में दूसरे हरिभक्त, आ गये। और बोले मेरे जूते की चोरी हो गयी है। कमेटी तथा महंत स्वामी को ध्यान देना चाहिए ? व्यवस्था करना चाहिए। ऐसे कैसा चलेगा ? मेरा जूता महंगा था। बैठा हरि भक्त बोला कि जूते की सुरक्षा आप को करनी चाहिए थी। इसमें मंदिर क्या कर सकता है। कुछ समय के बाद सूचना आई कि जिसने आत्मबुद्धि पर प्रश्न किया था। उसका जूता भी चोरी हो गया। उस भाई की भी टोन बदल गयी। वह भी कहने लगा कि मंदिर को अच्छी व्यवस्था करना चाहिए ? ऐसा कैसे चलेगा ? हम बोले आत्मबुद्धि का उत्तर आप को मिल गया होगा। यह बात इस लिये मैने किया कि आत्मबुद्धि का जीता-जागता उदाहरण देखना हो तो इस उत्सव में प्राप्त होगा। हरिभक्त कहते है कि ये हमारे संत, भक्त कहते है। यह मेरा मंदिर हमारे नरनारायणदेव, हमारा कच्छ देश, ऐसी आत्मबुद्धि का दर्शन उत्सव में दिखाई देता है। आप लोगो का जो हमारी प्रति आत्मबुद्धि है। हमारी जो स्वाभिमान है। हमारे सभी संतो भक्तो के प्रति है।

जेतलपुर के पाँचवे वचनामृत में, महाराजने एक वचन अति महत्वपूर्ण कहे है। हमे अधिक अच्छा लगता है। बहुत बडी वचन है। महाराज बोले है कि हमने नरनारायणदेव को स्थापित किया। उनका हृदय वाली बात कहता हूँ। क्यो स्थापित किया उसकी गुप्त बात बताना है। महाराज कहते है कि हम बार-बार श्री नरनारायणदेव की प्रभुता को लाते है। इसका यही हृदय है। श्री कृष्ण पुरुषोत्तम अक्षरधाम निवासी श्री नरनारायणदेव वह प्रतिदिन सभा में बिराजते है। वे अच्छा प्रभाववाले है। हम अपना रुप जानकर नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा किये है। इसमें और हमारे में रंचमात्र भी अंतर नही है। यदि आप हमारी इस बात को मानेगे तो जिस धाम से आये है। उसी धाम में आप को ले जायेगे। हमारा कल्याण हो चुका है। महाराजने जिम्मेदारी लेली है। महाराज कडक शब्दो में कहे है कि यदि आप इसका पालन नही करेगे तो हमसे कुछ मतलब नही है।ऐसे नरनारायणदेव हमे मिले है। इनके प्रति द्रढ विश्वास रखे। संतो ने भी कहा है कि नरनारायणदेव की मूर्ति बिना पूजा अपूर्ण है। प्रथम ४८ वे वचनामृत में भी महाराजने यह बात कहीहै।

इस उत्सव के पीछे जो आयोजन है। उसमें भुज के महंत स्वामी, युवक संत, कमेटी और हरिभक्त को धन्यवाद देता हूँ। अच्छी मिठाई खा लेने के बाद २-३ गिलास पानी पी जाने के बाद घंटो तक मीठे का स्वाद बना रहता है। इस प्रकार इस उत्सव में सभी को ऐसा आनंद आया कि वर्षो तक इस उत्सव का स्वाद बना रहेगा। मांडवी का मंदिर बन रहा था। सभा में मुरली मनोहर स्वामी थे। मै भी था। फंड के लिये प्रेरणाहेतु स्वामीकी अलौकिक विधी : सभा में नाम के साथ कह देते थे कि मनजीभाई आप को इतना देना है। कानजीभाई आप को इतना देना है। कोई मना नही करता था। स्थिति देख कर प्रेरणा करते थे। स्थिति नही होने पर सामने से मना कर देते थे। एक हरिभक्त आकर बोले, कि स्वामी मुझे इतना दान देना है. स्वामीजी कहते थे। सही बता यह पैसा भैंस बेचकर लाया है ? यह दान तुम्हारी क्षमता से बाहर का है। इस लिये पैसे वापस ले जाईये। संतो के प्रयास से ऐसे उत्सव और मंदिर बनते है।

सम्प्रदाय हमारा परिवार है। सम्प्रदाय की जिम्मेदारी और उन्नति का बेडा स्वयं महाराजने लिया है। इस लिये नरनारायणदेव की छत्र छाया में उन्नती होती रहे। भुज कमेटी द्वारा ऐसे उत्सव होते रहे। महंत स्वामी हमसे १० वर्ष बडे है। उनका स्वास्थ्य अच्छा बना रहे। महाराज उन्हे दीघार्यु करे। ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना करते है।

प.पू. लालजी महाराजश्री ता. २५-०४-२०२३ : जिस समय का हम सभी कई वर्षो से आतुरता के साथ राह देख रहे थे। उस नरनारायणदेव का द्विशताब्दी महोत्सव भुज के आँगन में मनाया जाये। लाखो हरिभक्तो को नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा दृढ करके लाभ ले। जब कि

आज नव-नव दिन तक गुजरात तथा गुजरात के बाहर उसी प्रकार विदेशो से लाखो हरिभक्त आये थे । प्रत्येक के हृदय में यही भाव था कि किस प्रकार नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा और बढे । प्रत्येक संत तथा दोनो देशो के संतोने यही प्रवचन दिया कि स्वामिनारायण भगवान, नरनारायणदेव के स्वरुप ही नही बल्कि नरनारायणदेव साक्षात है । महाराज स्वयं सर्व प्रथम नरनारायणदेव को अंश में लेकर अहमदाबाद में प्रस्थापित किये । बाद में भुज में नरनारायणदेव की स्थापना किये । आप देखेगे कि प्रत्येक स्थान पर महाराजने २७३ वचनामृत को कहे है । इसमें भी महाराजने महाप्रतापी नरनारायणदेव की महिमा का गान किये है । स्वामिनारायण भगवान देव के चौखट पर खडे होकर हम सभी को बताये है कि मुझमें और नरनारायणदेव में रंचमात्र भी अन्तर नही रखे । हम सभी देव के आश्रित है । उनके बच्चे-बच्चियाँ है । इस लिये हमारे दिल में रात्रि-दिन स्वाभिमान बना रहना चाहिए । कि हमे देव मिले है ।

कच्छ का इतिहास देखे तो महाराज ३० वर्ष तक गुजरात में रहे । उसमें से सात वर्ष तक कच्छ में रहे है । अधिक विचरण किये है । कच्छ के भाविक भक्त यहाँ पर मंदिर बनाने के लिये प्रार्थना किये थे । उसी समय महाराजजी वैष्णवानंद स्वामी को मंदिर निर्माण की जिम्मेदारी दिये थे । स्वामीजी अल्प समय में मंदिर बनावा दिया था । जो आज हम लोग प्रसादी के रुप में मंदिर का दर्शन कर रहे है । उसके बाद का इतिहास देखे तो अयोध्याप्रसादजी दादा कभी कभी लगभग आठ बार भुज में आये थे । और नरनारायणदेव के बगल में हरिकृष्ण महाराज की प्रतिष्ठा अयोध्याप्रसादजी दादाने अपने करकमलो से किये थे। हम लोग तो अधिक भाग्यशाली है । उसके बाद वासुदेवप्रसादजी दादा हो या देवेन्द्रप्रसादजी दादा वे लोग भुज में आकर सत्संग मजबुत किये थे । प्रत्येक को नरनारायणदेव के दर्शन कराते थे । प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. महाराजश्री का दर्शन आप सभी कर रहे है । बाहर देश में इन लोगो के विचरण के बार में हम सभी जानते है । प.पू. महाराजश्री की कच्छ भुज के सत्संग के प्रति आत्मियता और देव, संतो के प्रति लगाव में बचपन से देख रहा हूँ । यह गुण हमारे परिवार में वारसागत रुप से मिला है ।

आप सभी संत-हरिभक्तो के सहयोग और मेहनत से यह उत्सव भव्य रुप से मनाया गया । हम सभी गर्व का अनुभव कर रहे है । केवल धन से ही नही बल्कि वे सभी लोग जो तन, मन, धन, समय से सहयोग दिये है । गर्मी में पानी पिलाते है । यह एक बडी सेवा है । देश-विदेश से आये हरिभक्तो को कोई अवरोध नही आया । अच्छी सुविधा मिले । उसके लिये आप के साथ परिश्रम किये थे । सभी लोगो की शक्ति बढे । नरनारायण के प्रति निष्ठा और श्रद्धा बढे । आज पवित्र दिन पर नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना करते है ।

प.पू. महाराजश्री : (१) ता. १८-०४-२०३ : दो सौ वर्ष पहले का इतिहास हम देखे तो महाराजने अपने करकमलो द्वारा नरनारयणदेव की प्रतिष्ठा किये थे । आरती करके सत्संग समुदाय के हित हेतु हम लोगो को दिये है । हम अपने को भाग्यशाली कहे कम है । नेति-नेति करके खो जाये ऐसा है । प्रश्न करे देव नही होते तो ? हम लोग कहाँ और कैसे होते । हम और आप यहि भगवान नही मिले होते तो ? यह बडा प्रश्न है ? भूत, भविष्य, वर्तमान काल अच्छा रखने के लिये नरनारायणदेव का सहारा आवश्यक है । इसके अलावा कोई सहारा नही है । भूताकल में अपने बडे देव का होकर रहे है । वर्तमान समय में देव के है । भविष्य में रहने वाले है । इस कारण हम लोग सुखी है । दूसरा विकल्प नही है । बडे संत लोगो ने भजन किये है । हमने सामने से देखा है । आप के वृद्धोने इतनी ही भजन किये है । इस कारण से हम लोग सुखी है ।

महाराजने शिक्षापत्री मे लिखा है । लिखामी सहजानंद स्वामी सर्वान्निजाश्रितान् । नाना देश स्थितान् शिक्षापत्री वृतालय स्थितः ॥ कई प्रकार के छोटे, देश, हमारे आश्रित सभी सत्संगी छोटे देश अर्थात् कौन से देश ? आप जो सुदुर देश से आये है । वह देश । २२५ वर्ष पहले महाराजने विचार करके यह लिखे है । उस समय छोटे छोटे देश नही थे। हम सभी का कल्याण हो इस लिये महाराजने यह शिक्षापत्री देव और मंदिर हम लोगो को दिये है । महाराज बोले है मेरी

वाणी ही मेरा रुप है । इस लिये महाराज के वचन का पालन करे । तथा इस रुप को प्रत्यक्ष समझकर पूजा करे ।

यह उत्सव मेरा नही है । यह हम सभी का उत्सव है । नरनारायणदेव का यह उत्सव है । जब उत्साह हो वही उत्सव । हमे देखना है किसका उत्साह उठता है ? ये देव मिले है । इस लिये अपना अस्तित्व है । इस बात का सदैव ज्ञान रहना चाहिए । देव खुश है और रहेगे । उत्सव पूरा मनाना है । हर प्रकार का अनुबव प्राप्त करना है । एक अमृत की बूंद मिल जाने से अमरता मिल जाती ही । इसमें से कुछ गुणवाली बुद्धि मिल जाने पर अपना जीवन सफल हो जायेगा ।

संत-भक्त यहाँ हाजिर है । महंत स्वामी तथा बड़े संत है । हमें इसी पंक्ति में बैठाये है । आयोजको को आचार्य पद की गरिमा का ध्यान देना चाहिए। । यह सम्प्रदाय का सर्वोच्च पद है । इनके द्वारा आप सभी की सलाह है कि उत्सव मनाये । बार-बार नही आता है । आज हम लोगो के हिस्से मे आया है। हमें बाहर खडा नही रहना चाहिए । नदी में गोता लगाना चाहिए । इस में जुड जाये । २०० वर्ष हो गया है । २०० वर्ष बाद भी देखना है कि बच्चो में संस्कार बना रहे । यह नव दिन की कर्म भूमि है । इस में क्या लाभ मिलेगा । इसके लिये कार्य कर रहेहै ।

उत्सव तो अच्छे से होगा क्योकि यह देव का उत्सव है। स्वामिनारायण सम्प्रदाय में एक के बाद एक बड़े उत्सव ही होते है । कोई उत्सव छोटा नही होता है । नरनारायणदेव के उत्सव के लिये गौरवान्वित है । देवका दर्शन हो इससे बड़ी बात क्या है ? इस लिये हम शीघ्र आये है । देव को खुश करने के लिये सभी संत एवम् भक्त उत्सव में एक भाग रुप में आये है । सभी को धन्यवाद ! नरनारायणदेव आप सभी का कल्याण करे । ऐसी महाराज के चरणों में प्रार्थना है।

(२) ता. २१-०४-२०२३ (गृह मंत्रीश्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में) : सर्व प्रथम आप सभी संतो एवं हरिभक्तो का दर्शन करके आनंद मिला । हृदय खुश हुआ कि इस क्षेत्र में अपने सभी हरिभक्तो द्वारा सामाजिक धार्मिक कार्य महंत स्वामी एवम् संतो द्वारा किया जा रहा है । अभी स्वामीजी ने कहा कि उनके अनुसार हजारो की संख्या में मेडिकल सहायता दी गयी । हम लोग अधिक भाग्यशाली है।

हर्षभाई का स्वागत है । अपने घर के ही है । अधिक मुदु हृदय वाले है । हर्षभाई Wel Come, Once again अपने गृह मंत्री है । प्रेम वाले तथा सम्प्रदाय के प्रति हर व्यक्ति के प्रति मानवता रखते है । पूरी टीम जोश से काम करती है । हम करीब से जानते है । यह हम सभी के लिये गर्व की बात है । आप समय का दान दे रहे है इसलिये इन्हे कोटिशः धन्यवाद ।

देश-विदेश से लोग आये है । युगान्डा से अभी टीम आयी है । हम देख रहे है । केन्या, लन्दन, आस्ट्रेलीया, दुबई लगभग सभी जगह से लोग एक परिवार के रुप में एकत्र हुए है । अपने बाप भगवान एक है । हम सभी उनके बच्चे है । इस उत्सव मे एक होकर आजीवन कार्य करते रहे । ऐसी हमारी ईच्छा है । महाराज के चरणो में वंदना है । हर्षभाई जिम्मेदारी के साथ आये है । इनके पास समयाभाव है । हर्षभाई आये दो शब्द अवश्य कहे ।

(३) ता. २६-०४-२०२३ : जय स्वामिनारायण, भोजन मिलेगा, सबल रहे । भगवान का बल आप का बल है । हम सभी खुश है । औऱ खुश रहेगे । अधिक कार्य करना है । यह भगवान की शक्ति से करना है । यह उत्सव अच्छे से हो रहा है । मानले उत्सव पूरा हो गया है ।

बाद में पू. महाराजश्री गंगास्नान के उदाहरण से (जो आगे प्रकाशित हो चुकी है । कही गंगा स्नान के पश्चात गंगा नदी को अंतर में घर ले जाने पर पाप रहित हो जाते है । फिर पाप नही लगता है । आप उत्सव में भाग लिये है तो गठरी यही न रखकर घर तक ले जाये । उत्सव को अपने घर तक ले जाये । नरनारायणदेव के इस उत्सव से घर का कल्याण होगा । यह आप अपने आने वाले बच्चे-बच्चियो को दे । तभी यह उत्सव, समैया, सत्संग सार्थक होगा ।

देव का दर्शन हुआ । संतो-भक्तो का दर्शन हुआ । अत्याधिक आनंद मिला । खुशी मिली । ये रस-हर्ष सब भगवान का है । इसी हर्ष को प्राप्त करके जीवन व्यतीत करना है । ये संत आप के जीवन में इतना परिवर्तन ला सकते है कि ये मात्र भजन नही करते है । भजन अधिक करते है । चौविसी क्षेत्र में जाकर फावडा औऱ तगारा लेकर मंदिर बनाये है । ये

लोग लोगो के हृदय में मंदिर बनाये है। मै बुर्जुग संतो से मंदिर के इतिहास के बारे मे पूछता रहता हूँ। संत मंदिरो का इतिहास बताते है। इतिहास का ज्ञान हमारी पूँजी है। यही सत्य सम्पदा है। संतो द्वारा पोषित होती है। अबडासा के हरिभक्त, वागड के हरिभक्त सबका लोग ध्यान रखते है। आप सभी ने जो तन, मन, धन से सेवा दिये है। कुछ लोग यहाँ पर दिखाई नही दे रहे है। कई हरिभक्त फोटो भेजे है। परदे के पीछे रहकर कई लोग सेवा दिये है। उसका कारण मात्र सेवा है। भगवान को केवल खुश करना है । उन्हें हम प्रमाणपत्र नही दे रहे है । नरनारायणदेव आप लोगो की सर्टिफिकेट देगे।

नरनारायणदेव अधिक शक्तिशाली है।इससे अधिक कुछ नही है। अपना जीवन ऐशा ही है। उन्हे खुश करना है। अभी स्वामीजीने गाया कि मै हुं चाकर नरनारायणदेवनो.... हम लोग पहले खेत में मजदूर रखते थे। अब मिलते ही नही है। चाकर उसे कहा जाता है जिसकी बिक्री हो गयी हो। मै और आप भगवान के चाकर है। देव का अनाज खाकर हम जिंदा है। अपना अनाज खाकर नही जीते है। उत्सव अपनी शोभा बढाता है। अपने लिये है। देव की महानता है। इसका वर्णन नही कर सकते है। इससे सीख लेकर आगे बढना चाहिए।

आप सभी व्यापार करते है। पता नही, अलग-अलग प्रकार के व्यवसाय की बात कर रहा हूँ। उसके महत्वपूर्ण प्रमाणपत्र होते है। शेयर प्रमाणपत्र को आप सभी लाकर में सुरक्षित रखते है? अपने चेरिटी की एक आफिस कापी भुज कार्यालय में जमा करने की जिम्मेदारी आप की है।

मैने स्वामीजी से कहा है कि कच्छ-ओफिस के जो मंदिर है। उनके दस्तावेज प्रमाणपत्र मंदिर के कार्यालय में रखे। शायद कोई मंदिर स्वतंत्र नही रहे। ट्रस्ट भी हो तो भविष्य में अपना क्या? ट्रस्ट कहने के लिये है। हम आपके है। ऐसा लिखकर दे। तो कोई लिखता नही है। हमारा नियम है कि समय से सचेत हो जाये। देव का होकर रहने पर २-४ पीढी तक बचे रगेगे। आगे क्या होने वाला है किसको पता है? बात से नही काम करने से कार्य होता है। देव का जो है वह अपना है। ध्यान रखे। यह संस्कार बापजीने दिया है।

तीसरी महत्वपूर्ण वस्तु यह है कि अभी रामपरा के एक हरिभक्त आकर अपनी प्रसादी की भूमि का दस्तावेज नरनारायणदेव को अर्पण किये है। हरिभक्त धन्य है। आज जमीन के लिये हत्या कर दी जाती है। तब भी इस हरिभक्त से जीव के टुकडा के समान भूमि को देव को दे दिया है। पूरे भूज में प्रसादी की जगह अवश्य छोटी है। खेत नही चाहिए। १० X १० फुट की जमीन भी भुज मंदिर के नाम पर होनी चाहिए। होना ही चाहिए। यह भूमि मंदिर की ही रहनी चाहिए। इसके लिये केवल संत श्रम करे अच्छी बात नही है। हम सबकी जिम्मेदारी है। समय पर मंदिर का मूल्य दे दिया जायेगा लेकिन वह देव का होना चाहिए? यह बात सभी लोग अर्न्तमन मे रखे। ये तीन बात जीवन मैं अवश्य उतारे। मे कथा कहने नही आया हूँ। कथा स्वामी कहे है कथा महत्वपूर्ण है। क्योंकि अपनी कथा भगवान की होती है। भगवान की महिमा की बात होती है। यह बाते शरीर में उतार कर रखे। प्रबन्धकीय बात है तो चौविसी में जितनी जगह है। संकुल है छोटे-बडे कार्य देव के अर्न्तगत होने चाहिए। यह हमारे अन्तर की बात है। आप इसमें प्रयत्नशील होगे तो भगवान आप को तथा आनेवाली पीढी को सुखी रखेगे। इस पर ध्यान दे। कुँवा में रहेगा तो पात्र में आयेगा। रुपिया हो तो परचूरण निकले। महाराज के समय से ६ पीढी से मिलता आया है। भगवान के बल से कह सकता हूँ। व्यक्तिगत दोष सबमे होता है।

कई भक्तो से मुलाकात हुई। कुछ लोग मिल नही पाये। अन्दर से एक है। इसी तरह आगे बढते रहेगे। तो भगवान हमेशा अपने साथ रहेगे। भगवान को खुश करने के लिये नरनारायणदेव मिले है। इसका अभिमान समाप्त नही हो उस पर ध्यान देना होगा। सभी लोग खुश रहे। उत्सव लेकर जाये।

नरनारायणदेव की जय।

नरनारायणदेव की जय।

जोर से बोले...... जोर से बोले

नरनारायणदेव की जय।

हा, अभी ठीक है। आवाज अच्छी आई।

श्री स्वामिनारायण भगवान की जन्मभूमि छपैयाधाम के परिसर का नवीन निर्माण द्वारा विकास

– प्रफुल खरसाणी

अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति सर्वावतारी पूर्ण पुरुषोत्तम परात्पर परब्रह्म अक्षरादिक सभी के कारण ऐसे श्री स्वामिनारायण भगवान की जन्मभूमि छपैयाधाम में सर्वजीवो के कल्याण के लिये धर्मपिता भक्तिमाता द्वारा विक्रम संवत १८३७ चैत्र सुद-९ (नवमी) के दिन मानव शरीर धारण किये सभी ब्रह्मांडो में सर्वश्रेष्ठ सर्व प्रथम निज चरण का स्पर्श किये । वह पवित्र भूमि जिसे वेद नेति-नेति कहता है । वह अलौकिकधरा छपियाकी महिमा अवर्णनीय है । इस छपैया में आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने ई.स. १८५१ में तीन शिखरवाला महामंदिर बनवाये । प.पू. बड़े महाराजश्री के रजत जयंती सुवर्ण जयंती महोत्सव के फल स्वरुप उसका जीर्णोद्धार करवाये है । तथा जन्म स्थान मंदिर का जीर्णोध्धार करवाये है।

यहाँ पर बालस्वरुप घनश्याम महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठित है।

सम्पूर्ण विश्व में निवास करने वाले श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के सत्संगियो के लिये यह स्थान महत्वपूर्ण है।

उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा छपैया को पर्यटक स्थल के रुप में समावेश किया गया है । और अयोध्या में कुछ दिनो में ही राम जन्मभूमि मंदिर का थोडे दिनो में उद्घाटन होने वाला है । इस कारण से हरिभक्त तथा अन्य भक्तो का प्रवाह बढने वाला है।

इससे प्रेरित होकर श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री वर्तमान समय में अद्यतन विराम स्थल, भोजनालय, सभाकक्ष इत्यादि की आवश्यकता के कारण नये प्रांगण में निर्माण करने का संकल्प लिये है । और प.पू. आचार्य महाराजश्री के सीधे देख रेख में पूरा प्रांगण भव्य और सुंदर बन रहा है।

रु। १५८ करोड के खर्च से यह भगीरथ कार्य १५ एकड जमीन पर ५ लाख वर्गफुट का निर्माण कार्य किया जायेगा।

नवम्बर-२०२० में शिलान्यास करने के बाद इस संकुल में आधुनिक सुविधा से युक्त ५०० जितने कमरे बनाये जायेगे । इसके बाद यहाँ आधुनिक सुविधायुक्त भोजनालय बनेगा । जिसमें संत, मेहमान तथा हरिभक्तो के लिये अलग से भोजन करने की व्यवस्था बनाई जायेगी । १००० व्यक्ति एक साथ भोजन कर सके । कथा पारायण के लिये नवीन साउन्ड प्रणाली और आरामदायक बैठकवाले ६०० श्रोताओ के लिये दो हाल तैयार होने वाले है।

प्रसादी का नारायण सरोवर नये रुप में देखने लायक रुप में तैयार किया जा रहा है । इस संकुल में यात्रीयो के अल्पाहार के लिये कैन्टीन बनाई गयी है।

अद्यतन गौशाला निर्माण करके गायो की सुरक्षा के साथ उनका पालन-पोषण हो सके । इसका कार्य तीव्रता से हो रहा है । रेलवे द्वारा छपैया स्टेशन पर करोडो खर्च करके नवीनिकरण किया गया । तो आईये भगवान के जन्म स्थान के सुंदर प्रबन्ध में आप सभी सहयोगी बने । तथा आने वाले पीढ़ी के लिये वरदान स्वरुप हो।

श्री स्वामिनारायण भगवान के चरण पावन प्रसादी के गाँव

पाटण

– शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर)

- अहमदाबाद कालुपुर मंदिर से सडक द्वारा २ घंटे ३४ मिनट
- अहमदाबाद विमान अड्डे से २ घंटे २३ मिनट

अहमदाबाद से रेल्वे द्वारा पाटण जाते है । उसी प्रकार अहमदाबाद से एस.टी. बस द्वारा पाटण जाते है । पाटण गुजरात का प्राचीन शहर है । पाटण मेहसाणा जिला में आता है ।

यहाँ पर हरिमंदिर है । मंदिर का दरवाजा पूरबमुखी है । मंदिर में सहजानंद स्वामी की मूर्ति प्रस्थापित है । यहाँ पर श्रीहरि प्रस्थापित है । मंदिर से थोडा दूर सत्संगी के मोहल्ले में पीपल का वृक्ष प्रसादी का है । यहां के प्रसिद्ध राजा परोपकारी सिद्धराज नाम के थे । जिसे सभी लोग जानते है ।

पाटण के राजा सिद्धराज का जन्म सत्संग में हुआ और महानभक्त वीर भगुजी नामक पार्षद बन गये ।

संवत १८५९ के वर्ष में भगवान स्वामिनारायण संतो के साथ मूली आये थे । एक दिन भोगवती नदी के किनारे पत्थर से बना रेतियो कुवाँ था । उस कुवे के उपर बैठकर संतो सहित स्नान विधि करके सामने के किनारे पर हनुमानजी तथा शंकरजी है । उस जगह पर सभा करके प्रभु विराजमान हुए थे । अपने कुल देव का दर्शन करके श्रीजी बोले ''कष्टभंजन'' भी पाटण के राजा सोलंकी सिद्धराज जयसिंह का कष्ट नही दूर नही किये । यह सभी सुनकर बोले कि महाराज हमें विस्तार से बताये । श्रीजी बोले सभी लोग सुने । सिद्धराजसिंह बडे दानी थे । कांकरिया, मालव, मुनसर, वडनगर के विसनगर का, हलवद का, सायला का, चंद्रासर जैसे १०८ तालाब सिद्धराजने बनवाया था । सिद्धपुर में रुद्रनाक भी बनाये थे । उसमें ग्यारह मंजिल बनवाये थे । अपनी प्रतिष्ठा मे हलवद जैसा एक हजार गाँव ब्राह्मणो को दान दिये थे । इसी कारण से औदिच्य सहस्त्र कहे जाते है । रुद्रमाल का शिलान्यास देखने वाले उजड जोशी कहते है कि ''शेष के शिर पर यह कील लगी है ।'' सभी बोले आप गप्पा मार रहे है । कहाँ पर शेष ? और कील कहाँ पर है ? जोशीने कहा ''कील निकाले वह खुन से युक्त होगी । कील देखा गया तो रक्त वाली थी । फिर से कील लगाई गई तो जोशीजी बोले कि अब पूछ पर लगी है । इसी के साथ रुद्रमाल गिराने वाले पैदा होगा । वह अलाउद्दीन खिलजी था । सिद्धराजने ब्राह्मणो से आशीर्वाद माँगा कि मेरा पुत्र परिवार नही हो । तब घेला जोशी ने कहा 'हे महाराज ! संसार में सभी लोगो पुत्र की कामना में दान, पुण्य, तीर्थ प्रवास करते है । तथा बडे महात्मा का आशीर्वाद लेते है । सिद्धराज उल्टा क्यो बोले इसका कारण क्या है ? तभी श्रीजी महाराजने कहा कि जोशी किसी समय पाटण के राजा सोलंकी सिद्धराज जयसिंह घुम रहे थे । तो रास्ते में बाव आये । यह तालाब एक साहुकार ने बनाया था । तीसरी पीढी में पुत्र पैदा हुआ था । वह

गरीब हुआ । खाने की किल्लत थी । वह केवल वणिक पुत्र एक पैसा लेता था । वाव में से पानी पीने को दिया जाता था । सिद्धराज पानी पीने गये । तभी वनिया का बेटा पैसा माँगा । तभी सिद्धराज ने कहा कि वाव, तालाब पुण्य के लिये होता है । आप पैसा क्यो माँग रहे है ? वह बोला हमारे पूर्वजोने एक लाख खर्च करके बनवाये है । इस समय हमारे पास खाने की व्यवस्था नही है । तो इसमें से खर्च चलता है । सिद्धराज ने कहा कि मै तुम्हे एक लाख रुपया देता हूँ । इसके बाद किसी से पैसा मत लेना । इस बात से सिद्धराजसिंह को ज्ञान हुआ कि ''जो हमने देवालय, पोखरे, तालाब, सराय बनवाये है । सभी की आजिविका भी चल रही है । धर्मादा भी दिये है । यदि मुझे भी इसी तरह का वंश मिला तो सभी नर्क में जायेगे ।

स्वदत्ता परदत्तांवा ब्रह्मवृतिंहरेच्चयः ।
षष्ठि वर्ष सहस्त्राणि विष्ठायां जायते क्रमिः ॥

खुद द्वारा दी गयी । दूसरे के द्वारा दी गयी देव विप्र की आजिविका जो पीछे ले लेता है । वह साठ हजार वर्ष तक मल में कीडे के रुप में निवास करता है । वह आजिविका अनजाने में वापस आ जाये तो तीन पीढी नरक में जाती है । यदि जानबूझ कर ले ले तो दस आगे की दस पीछे की पीढी नरक का प्राप्त करती है ।

बाद में रुद्रमाल की प्रतिष्ठा हुई । उस समय सिद्धराज जयसिंह को उजड जोशी की बात याद आई । इसी के साथ गिराने वाला पैदा होगा । इससे राजा शोकातुर हुए । आँख से आँसु निकालने लगे । तभी हेमचंद्र ने कहा कि जोशी के वचनानुसार सभी सत्य होगा ? तब सिद्धराजने कहा यह सत्य ही है । भविष्य में मनुष्य ऐसे ही होगे । धर्मादा के घर का पत्थर बेचकर खालेगे । दान के धन से धनवान बनना चाहेगे । शरीर पैदा होता है । और नष्ट हो जाता है । सूर्योदय होता है । सूर्यास्त भी होता है । पृथ्वी से वृक्ष उगते है । वह भी नाशवान है । जो जन्मा उसका नाश है । लेकिन तुरंत नष्ट होने पर कष्ट होता है । हमारे पास पुत्र परिवारभी नही है । अब क्या होगा ? तभी ब्राह्मणोने कहा 'अरे सिद्धराजजी, हनुमानजी चिरंजीवी है । महाबलवान है । इसलिये उनकी प्रतिष्ठा करें । वही रक्षा करेगे । हनुमानजी की मूर्ति प्रतिष्ठा के समय ब्राह्मणोने वेदमंत्रो के सामने हनुमानजी को बुलाकर बोले कि आप रुद्रमाल की रक्षा करे । तभी कष्टभंजन हुमानजी ने कहा ''हमसे रक्षा नही होगी'', क्योकि मेरे आराध्य को प्रातः गद्दी मिलने वाली थी । लेकिन वनवास मिला । जो होना है । वह होकर रहेगा । घेला जोशी कष्टभंजन ने सीधे नही कहा है कि सिद्धराज जयसिंह जीवित रहते किसी के सामने झूके नही । लेकिन आने वाले शत्रु से हाथ जोडकर विनंती कि है कि जब भी रुत्रमाल को नष्ट करे तो इसकी कुछ निशानी रखो । ऐसा पाटण में लिखवाकर गये । सिद्धराज की मृत्यु के पश्चात उलाउद्दीन खिलजीने साढे तीन सौ तोपो से रुद्रमाल को तुडवाकर अपने मंत्री नसरखान को लेख पढने के लिये भेजा था । पढकर वह बोला कि तत्पश्चात अलाउद्दीनने तोडने के लिये मना कर दिया था । रुद्रमाल तोडकर समीप में मस्जिद बनाया था । उस समय श्रीजी महाराजने दैवीय - राक्षसी का वर्णन किये । दैवीय जीव का दान पुण्य में काम आथा है । इससे धर्म, भक्ति और ज्ञान वैराग्य प्राप्त होता है । और प्रभु मिलते है ।

राजा सिद्धराज के पुण्य से थोडे दिन में भगुजी दाडा गरासिया होगे । और हमारे हाजिरी में सेवा करेगे । तथा अक्षरधाम की प्राप्ति करेगे । इनके राज में हमारा सत्संग होगा । भगुजी मुली मंदिर में भी सेवा देगे । श्रीजी महाराज आकर सभा का विसर्जन किये थे ।

इस प्रकार पाटण के राजा सिद्धराज जयसिंह सत्संग में जन्म लेकर वीर भगुजी नामक पार्षद हुए । श्रीजी महाराज तथा संतो की सेवा करके अंत में अक्षरधाम को प्राप्त किये थे ।

श्रीहरि जन दंढाव्य देश में विचरण करते तब पाटण आये थे । पाटण के हरिभक्तो को धन्य किये । श्रीहरि के समय पाटण के भक्तजनो की सूची स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने ''भक्तचिंतामणी'' ग्रंथ में निम्नानुसार है ।

-: चौहाई :-

भक्त भावसार दयालजी
पुरुषोत्तमने भक्ति रजी ॥५१॥
कणभी भक्त छे ईच्छो बेयर,
भजे हरि छे पाटणे घर ॥

इस आधार पर उपरोक्त हरिभक्तो को श्रीहरि कल्याणकारी उपदेश देकर अक्षरधाम के अधिकारी बनाये थे ।

(पाटण की लीला संम्पूर्ण)

(पाटण की लीला संम्पूर्ण)

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में निर्जळा एकादशी के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से गुजरात राज्य साहित्य अकादमी और कालुपुर मंदिर के संयुक्त साहस से ''प्रेम सभी प्रेमानंद कीर्तन आराधना'' कार्यक्रम रखा गया । जिस में प.पू. बड़े महाराजश्रीने प्रारम्भ से कार्यक्रम करके प्रोत्साहित किये । म्यूजियम के १२ नं. हाल में इस कार्यक्रम को ५०० जितने हरिभक्त आनंद से मिले थे ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-मई-२०२३

दि. ०१-०५-२०२३ प.भ.श्री मावजी शिवजी वरसाणी – सामत्रा वर्त. यु.एस.ए.

दि. ०५-०५-२०२३ प.भ.अ.नि. महेशभाई जीवाभाई पटेल – मोासण – ह. हर्षाबेन, उचित, प्रियंका तथा सान्वी.

दि. १०-०५-२०२३ प.भ.श्री सुरेशभाई मोहनभाई ठक्कर – वासणा – हा. भाविनभाई, हेतलभाई तथा सुनीलभाई.

दि. २१-०५-२०२३ प.भ.श्री विनोदकुमार मणीभाई पटेल – फिचोड – ता. ईडर

दि. २३-०५-२०२३ प.भ.श्री नेविल विपुलभाई पटेल – यु.एस.ए. – हा. माणेकभाई पटेल (कलोल)

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) धर्नुमास पारायण का अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "भगवत प्राप्ति हेतु स्वभाव में सुधार लाना पडता है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम जो भजन-भक्ति करते है । यह किसके लिये है ? भगवत प्राप्ति के लिये कई बार ऐसे प्रश्न पैदा होते है । तो भगवान प्राप्ति के लिये तपस्या करना पडता है । शास्त्र में कई उदाहरण दिये गये है । ऋषि मुनि किस तरह से तपस्या करके भगवत कृपा किये है। ये लोग सब कुछ छोडकर वन में जाकर तपस्या करते थे । ठंडी, गर्मी, वर्षा, बर्फ सभी कुछ सहन करते थे । आज के समय में यह सम्भव है । गृहस्थ जीवनमें सब कुछ छोडकर चले जाना क्या यह उचित है ? महाराज कहे है कि गृहस्थ जीवन श्रेष्ठ है । डबल जिम्मेदारी होती है । घर की (सांसारिक) एवम् आध्यात्मिक यह दो जिम्मेदारी गृहस्थ उठाता है । सब कुछ छोड देने से कुछ प्राप्त नही होता है । जिम्मेदारी से भागने पर प्रभु खुश नही होते है । आज के समय में जीवन में कठिन समय आता है । ये समस्याये सभी के जीवनमें आती ही है । इस प्रकार चुनौतियाँ समाप्त नही होती है । चुनौतियो को पार करने के लिये धर्म को नही छोडना चाहिए । अपने विवेक का उपयोग करके शास्त्रो के माध्यम से मार्ग ढूँढना चाहिए । जिस से विषम अवस्था से बाहर आ सके । धर्म की रक्षा भी हो सके । यह एक प्रकार की तपस्या ही है । हम सब के उपर तो नरनारायणदेव की ऐसी कृपा है कि हम लोग देव के प्रांगण में बैठकर भजन करने का लाभ मिलता है । कुछ किये ही तप का फल मिल जाता है । जो व्यक्ति एकबार नरनारायणदेव का दर्शनकर लेने से व्यक्ति का हृदय परिवर्तन प्रारम्भ हो जाता है । पारसमणी का स्वभाव कैसा है ? लोहे को सोने में बदल देता है । किसी भी अवस्था में लोहा जब पारसमणी के सम्पर्क में आता है तो वह सोना बन जाता है । क्योंकि ? पारसमणि में वह ताकत होती है । सच्चा पारसमणि किसी भी लोहे को सोना बना देते है । एकबार जब मनुष्य नरनाराणदेव का दर्शन करके उनके चरण में नमन करते है । आप के हृदय में अलग अनुभव होगा । हृदय परिव्रतन अवश्य होती है । अमि दृष्टि पड जाने पर आश्चर्य जनक अनुभव होता है । जिसका वर्णन नही किया जा सकता है । कोई व्यक्ति दया का याचना करता है । कोई करुणा की याचना करता है । तो भी मिलता है । लोग भगवान की परीक्षा करने के लिये भी आते है । फिर भी सभी के उपर कृपा बनी रहती है। यदि बदलाव नही होता है । तो आप की अन्तर आत्मा की दशा बदलती है । इस पर निर्भर करता है । जंग से युक्त लोहे से सोना नही बना सकते है । उसी प्रकार किसी के हृद यमें मलिनता है । तो हृदय परिवर्तन नही होता है । फिर भी देव की करुणा अनवरत बहती रहती है । हम ८४ लाख योनियो में आये है । उसके लिये हम जिम्मेदार है । अवगुण अपना स्वभाव बन जाता है । हम इसे अवगुण के रुप में नही लेते है । यही स्वभाव हमारे आदत में बदल जाती है । इसे छोडने में

समय लगता है। हमारे जीवन में कुछ एक ऐसी आदत बनी होतीहै। जो मात्र २-३ वर्ष के अन्दर विकास को होगी । इसका त्याग करने पर भी द्रढता नही है । यह जन्म जन्मान्तर का प्रभाव होता है। इस लिये छोड नही पाते है । इस मनुष्य योनि में रहने पर भी पूर्व का आश्वासन आता रहता है । यह हमारे अन्तर आत्मा को खराब करती है। तो इस स्वभाव को कैसे सुधार सकते है ? जो यह ही है । नही जाता है क्या करे ? ऐसा नही रखना है। क्योकि ? यदि हम थोडा सा भी प्रयास करे तो स्वभाव अवश्य बदलता है। कैसे ? जो अपेक्षा हम सामने वाले से रखते है। वही अपना क्रम बन जाता है। हम सभी से अपेक्षा रखते है। कि कोई झूठ नही बोले, हमे कोई दुःखी नही करे । लोग हमारी मदद करे । सभी लोग अच्छा व्यवहार करे । जो हमें प्रिय लगे । तो यही भावना हमें भी रखनी चाहिए। तो स्वभाव स्वतः सुधर जायेगा। लेकिन ऐसा कब होता है ? हमारी बुद्धि जब शुद्ध रहती है । मन पवित्र होता है । तब ऐसा होता है । जिस की सात्विक बुद्धि होती है । इस प्रकार वाले व्यक्ति के साथ रहना चाहिए। तो बुद्धि की शुद्ध होती है । कभी ऐसा आभास होगा कि भगवान के सिवाय कोई शुद्ध नही होता है। तो क्या करे । इसके लिये शास्त्र है । शास्त्र का श्रवण है । मनन चिंतन सब करने पर हमारी बुद्धि शुद्ध होती है . बुद्धि और मन शुद्ध होने पर इन्द्रियाँ सात्विक आदेश देती है। तो इसका पुनरावर्तन करते रहना चाहिए । सब कुछ चालू रखे । एकबार सत्संग में आने से कुछ नही होता है। एकबार वचनामृत पढने से कुछ नही होता है। एक बार शिक्षापत्री पढलेने से कुछ नही होता है। प्रतिदिन अध्ययन करना चाहिए। हमारा अधिक समय कहाँ चला जाता है ? हम अच्छे कैसे कहे जाये ? लोग कैसे कहते है कि इन्होने हमारी सहायता की है । सभी लोग अच्छे लोग की प्रशंसा करते है। सबको अपनी प्रशंसा पसंद है। कैसे अच्छे बने इसके लिये प्रयास करना चाहिए । इसके लिये प्रतिदिन प्रयत्न करते रहना चाहिए। भगवान सब कुछ बता कर गये है। शिक्षक पढाते है। लेकिन गृहकार्य तो स्वयं करना पडता है। आपके श्रम के आधार पर पास-नापास का परिणाम मिलता है । सबसे बडी उपलब्धि यह है कि हम लोगो को अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति का सहारा मिला है । समुद्र मे से आप चम्मच से या तपेली से जल लेना चाहते है। यह बात आप पर निर्भर करती है । सोते समय आप अवश्य सोचे कि आप के पास कौन सी वस्तु नही है । हमारे अंदर कैसे विकार भरे है। और सत्संग नियमित करे । आज्ञा और नियम में रहे । प्रयास करने से सब कुछ धीरे धीरे मिलता है।

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये महंत स्वामी की नियुक्ति

सम्प्रदाय के विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद के नये महंत स्वामी के रुप में स.गु. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी देवकृष्णदासजी (वर्तमान-गांधीनगर सेक्टर नं.-२ के महंतश्री) को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने ता. १९-०५-२०२३ के दिन नियुक्त किये है। यह पूरे सत्संग को ज्ञान हो

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी का पाँचवा वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा के सह समग्र धर्मकुल परिवार के शुभ आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (अहमदाबाद-गांधीनगर) की प्रेरणा से और प.भ. श्री दासभाई तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के प्रबन्ध से थोडे समय के अन्तर से जिस मंदिर ट्रस्ट का विलीनीकरण अपने कालुपुर मंदिर ट्रस्ट में किया गया है। ऐसा श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी का पाँचवा वार्षिक पाटोत्सव ता. १०-५-२३ से १४-५-२३ तक भव्य-दिव्य रुप में मनाया गया है।

इस अवसर पर प.भ. श्री देवचंदभाई शामजीभाई डोबरिया परिवार के मुख्य यजमान पद से और महंत स.गु. शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी (नाराणघाट) के वक्ता पद से वैराग्यमूर्ति स.गु. निष्कुळानंद स्वामी विरचित ग्रंथराज पुरुषोतमप्रकाश की रात्रि पंचान्ह पारायण का संगीतमय शैली में आयोजन किया गया था। इसी के साथ पोथीयात्रा श्री घनश्याम जन्मोत्सव, श्रीहरि गादी अभिषेक, रास-गरबा उमंग के साथ किया गया था। प्रारम्भ में ता. ९-५-२३ के दिन रात्रि में धुन-कीर्तन का कार्यक्रम रखा गया था।

समूह महापूजा तथा विष्णुयाग की पूर्णाहुति अन्नकूट आरती प.पू. महाराजश्री करकमलो द्वारा किया गया था। प्रासंगिक सभा में प.पू. महाराजश्रीने सभी को शुभआशीर्वाद दिये थे। निकोल क्षेत्र में मंदिर के प्रोत्साहित किये थे। प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री बहनो को लाभ दी थी। अहमदाबाद (कालुपुर) गांधीनगर, कोटा, नाराणघाट, एप्रोच, बापुनगर, कोटेश्वर गुरुकुल, आदरज, उनावा आदि धाम से ब्रह्मनिष्ठ संत आये थे। तथा प्रासंगिक प्रवचन से कथा का पोषण किये थे।

इस अवसर पर ठाकुरजी के सिंहासन में ए.सी. फिटींग की सेवा की गई। स.गु. शा. स्वामी व्रजभूषणदासजी (कोटेश्वर) ने सभा का संचालन किये थे। अंत में सभी भक्तोने भोजन प्रसाद की उत्तम व्यवस्था थी। (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

गामडी गाँव में भव्य पाटोत्सव

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव, जेतलपुरधाम में बिराजमान श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. १०८ लालजी महाराजश्री एवम् पूरे धर्मकुल परिवार के आज्ञा-आशीर्वाद से जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन पर ता. २८-४-२३ से १-५-२३ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर गामडी भाईयो का मंदिर का १९४ वे पाटोत्सव तथा बहनो के मंदिर का ५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया था।

इस महोत्सव के अवसर पर श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रंथ की कथा श्री तुलसी विवाह, समूह महापूजा, अभिषेक, अन्नकूट आदि अवसर को मनाया गया था। कथा के वक्तापद पर शास्त्री स्वामी धर्मनंदनदासजीने लाभ दिया थआ। धामो से संत तथा सांख्ययोगी बहने आकर आशीर्वाद दी थी। कथा पारायण के यजमान पद पर प.भ. श्री पंकजभाई नटवरभाई पटेल पाटोत्सव के यजमान पद पर प.भ. श्री जिकीनभाई नारणभाई पटेलने लाभ उठाया था। पूरे गामडी गाँव के हरिभक्त के सहयोग से उत्सव भव्य रुप से मनाया गया था। (महंत के.पी. स्वामी - जेतलपुर)

गामडी गाँव में भव्य पाटोत्सव

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. १०८ लालजी महाराजश्री एवम् पूरे धर्मकुल परिवार के आज्ञा-आशीर्वाद से जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री गोविंदपुरा गाँ, ता. कडी, जि. मेहसाणा - खाखरिया देश में ता. १६-५-२३ से ता. १८-५-२३ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा के महोत्सव का उल्लासपूर्वक मनाया गया था। इस अवसर पर त्रिदिनात्मक श्रीमद् सत्संगिजीवन ग्रंथ की कथा पारायण शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी कथामृत का पान कराये थे। धामो से संत-सांख्ययोगी बहने आकर आशीर्वाद दिये थे। भव्य पोथीयात्रा, नगरयात्रा तथा विष्णुयज्ञ सुंदर रुप से पूर्ण किया गया था। ता. १८-५-२३ के दिन प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारकर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधि से पूर्ण किये थे। इसके बाद सभी को आशीर्वाद दिये थे। पूरे खाखरिया प्रांत के हरिभक्तोने अच्छा प्रबन्ध किये थे। (शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी - जेतलपुरधाम)

रजत शताब्दी महोत्सव बिलिया

आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर बिलिया द्वारा आयोजित

अ.नि. स.गु. भक्तिनंदनदासजी द्वारा प्रतिष्ठित महाप्रतापी देव श्री कष्टभंजनदेव का १२५ वाँ वर्ष का रजत शताब्दी महोत्सव ता. २१-५-२०२३ से २७-५-२०२३ तक उल्लास पूर्वक मनाया गया था।

अ.नि. स.गु. स्वामी घनश्यामजीवनदासजी तथा स.गु. महंत स्वामी श्री देवप्रसाददासजी (वाली) कोठारी स्वामी हरिप्रसाददासजी (वाली), स.गु. शा. स्वामी चंद्रप्रकासदासजी (बावला महंतश्री), स.गु. स्वामी व्रजविहारीदासजी (बिलिया महंतश्री), स.गु. शा. स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी (हिंमतनगर महंतश्री) समस्त वाली मंडल के संत के अथक परिश्रम से तथा बिलिया गाँव के सभी हरिभक्तो के सहयोग से इस उत्सव को उल्लास पूर्वक मनाया गया था। दादा की महिमा समझकर सुरत मे रहने वाले बिलीया के भक्त पदयात्रा किये थे। सात दिन तक हनुमान की चरित्र का वर्णन हुआ था। जिसके वक्ता पद पर सम्प्रदाय के प्रसिद्ध कथाकार स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी ने कथा का लाभ दिये थे। त्रिदिवसीय मारुती यज्ञ का प्रबन्ध किया गया था। इस अवसर पर प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री आकर दर्शन-आशीर्वाद दिये थे। धाम से संत एवम् सांख्ययोगी बहने पधारकर आशीर्वाद दिये थे। बिलिया, सुरत के युवक, बालक, बालिकाये अनेक नाटक उत्सव में दिखाये थे। राजोपचार से श्री हनुमान दादा की पूजा की गई थी। हजारो लोगोने इसमें भाग लिये थे। तथा जीवन को धन्य किये थे। (शा. स्वामी धर्मनंदनदास - जेतलपुरधाम)

सम्प्रदाय के सर्वोपरि तीर्थधाम छपैया में पाटोत्सव के अवसर पर श्री घनश्याम चरित्र कथा पारायण

परब्रह्म परमात्मा सर्वोपरि बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज की परमकृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के पूज्य महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन से सम्प्रदाय के सर्वोपरी तीर्थधाम छपैयापुर धाम में विराजमान बाल स्वरुप घनश्याम महाराज आदि देवो के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्री घनश्याम बाल चरित्र पंचदिनात्मक कथा पारायण प.भ. महेन्द्रभाई छोटाभाई पटेल (बकाभाई) (कालीगाम - साबरमती वाले) परिवार यजमान पद पर ता. २७-५-२०२३ से ३१-५-२०२३ के मध्य उल्लास पूर्वक पूर्ण हुआ। कथा पारायण के वक्ता पद पर सम्प्रदाय के प्रसिद्ध युवक कलाकार पू. स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्ता पद पर थे यहाँ पर आये सभी यात्री सायं कथा का श्रवण करके धन्य हुए। पूरा कथा का संचालन सगु. शा. स्वामी नारणमुनिदासजी (कोटा-अहमदाबाद मंदिर के कोठारी)ने किया था। कथा में आने वाले प्रसंग को अच्छे से मनाया गया था। मंदिर के महंत स्वामी स.गु. देवप्रसाददासजी उनके वयोवृद्ध गुरु स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी और संत-पार्षद मंडल सुंदर व्यवस्था की गयी थी। अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी शुरु के दो दिन विशेष रुप से आये थे।

पूरे अवसर पर धाम से संत, पार्षद, मंडल सेवा में जुडे थे। यजमान परिवार और उनके सगे लोगोने अलौकिक लाभ उठाये थे। ज्येष्ठ सुद-११ ता. ३१-५-२०२३ के दिन ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक पूज्य संतो द्वारा पूर्ण किया गया। बाद में कोठारीजीने अन्नकूट की आरती उतारे थे। (कोठारी अहमदाबाद - कोटा शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर चांदीसणा पुनः प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा प.पू.स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर-गांधीनगर) के प्रेरणा मार्गदर्शन से चांदीसणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में पूनः मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. ८-५-२०२३ से १०-५-२०२३ तक मनाया गया था। इस महोत्सव के अर्न्तगत श्रीमद् सत्संगिजीवन त्रिदिवसीय कथा पू. स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्ता पद पर धामधूम से पूर्ण हुआ था। पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा के मुख्य यजमान प.भ. भीखाभाई कचरादास पटेल, अ.सौ. दिपाबेन भीखाभाई पटेल, प.भ. इन्दुभाई कचरादास पटेल, अ.सौ. सुभद्राबेन इन्दुभाई पटेल परिवार थे। पारायण यज्ञ आदि में यजमान परिवारोने लाभ उठाया था।

ता. १०-५-२०२३ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री आये थे। उनके कर कमलो द्वारा पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा विधिवत रुप से पूरी की गयी थी। धामो से संत लोग आये थे। सभी हरिभक्तोने अच्छा लाभ प्राप्त किये थे। सभा का संचालन स.गु. कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदास (कारुपुर-कोटा) ने शोभित किया था। (कोठारी श्री चांदीसणा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क का ३५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा प.पू.स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर-गांधीनगर) के प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क का ३५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. ३०-५-२०२३ के दिन खुशी से मनाया गया। जिसके यजमान अ.नि.प.भ. नटवरभाई शनाभाई ठक्कर, अ.नि. कांताबेन नटवरभाई ठक्कर की याद में प.भ. लालजीभाई नटवरभाई ठक्कर और अ.सौ. भानुमतीबेन लालजीभाई ठक्कर परिवार था।

अहमदाबाद मंदिर के महंतश्री पू. पी.पी. स्वामी, पू. शा. राम स्वामी, पू. शा. मुनि स्वामी आदि धाम से आये संत आशीर्वाद दिये थे। ता. ३०-५-२०२३ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री पधारकर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती किये थे। सभा में

आशीर्वाद भी दिये ।(स्वामी देवप्रकादासजी - उनावा महंतश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जडेश्वरपार्क महादेवनगर २८ वाँ पाटोत्सव और श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा प.पू.स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर-गांधीनगर) के प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर जडेश्वरपार्क महादेवनगर मंदिर का २८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव १७ मई से २१ मई तक उल्लासपूर्वक मनाया गया था । इस अवसर के उपलक्ष्य में स.गु. शा. स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण गुरुकुल) के वक्ता पद से की गई । उन्होने श्रीमद् भागवत पंचान्ह रात्रिय पारायण मनाया गया था । पूरे प्रसंग के आयोजक पू. स.गु. शा. स्वामी व्रजभूषणदासजी (गांधीनगर-कोटेश्वर) श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा समस्त सत्संग समाज जडेश्वर पार्क महादेवनगर था ।

ता. २२-५-२०२३ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री भी आये थे । ठाकुरजी की आरती करके सभी को आशीर्वाद दिये थे ।

उत्सव के प्रारम्भ में पू. स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) मंगल उद्घाटन किये थे । धामो से संत पधारकर आशीर्वाद दिये थे । पूरे प्रसंग का संचालन स.गु. शा. स्वामी व्रजभूषणदासजी (कोटेश्वर-गांधीनगर) किये थे । इस अवसर कई भक्त यजमान बनकर सुंदर सेवा किये थे ।(महंत शा. स्वामी देवप्रकाशदासजी - उनावा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (आर.सी. टेक्नीकल रोड) घाटलोडीया का छठ्ठा वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद अहमदाबाद कालुपुर-गांधीनगर ने किया था । इस अवसर पर कई हरिभक्त यजमान सुंदर सेवा दिये थे । महंत पू. स.गु. स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी तथा स.गु. स्वा. व्रजभूषणदासजी (गांधीनगर) के मार्गदर्शन से आर.सी. टेक्नीकल रोड घाटलोडिया द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर समस्त सत्संग समाज श्री स्वामिनारायण मदिर (आर.सी. टेक्नीकल रोड घाटलोडिया) का छठ्ठा वार्षिक पाटोत्सव २२ मई से २४ मई २०२३ के मध्य मनाया गया था । इस अवसर पर विदुरनीति, त्रिदिन रात्रिय कथा पू. स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (आदरजधाम) के वक्ता पद से की गई ।

इस उत्सव के अवसर पर अ.नि. प.भ. श्री नाथजीभाई ईच्छाराम शुक्ल तथा अ.नि. प.भ. श्री ईश्वरलाल लाभशंकर पंड्या शिष्य मंडल की तरफ से सुंदर सेवा दी गयी थी ।

पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. अनिलकुमार दयालजी पटेल (खंडेरावपुरा) परिवार था । अन्य कार्यो के लिये और हरिभक्त यजमान थे ।

ता. २२-५-२३ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री आकरके ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा को आशीर्वाद दिये थे । इस अवसर पर पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) तथा स.गु. शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर, महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (नारणघाट) आदि संत मंडल आये थे ।(महंत शा. स्वा. देवप्रकाशदासजी - उनावा)

नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर अनमोल विला कडी शिलान्यास विधि श्रीराम कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा प.पू.स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर-गांधीनगर) के प्रेरणा मार्गदर्शन से नवनिर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री नरनारायणधाम अनमोलविला कडी द्वारा आयोजित नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मे शिलान्यास महोत्सव ३-५-२३ से ७-५-२३ तक श्रीराम कथा पारायण ज्ञानयज्ञ पु. स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्ता पद से की गई थी ।

ता. ७-५-२३ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा नूतन भव्य मंदिर और सामाजिक सेवा के लिये अद्यतन हाल आदि का विधिवत शिलान्यास विधि पूर्ण की गई । इस अवसर पर स.गु. महंत पू. शा. पी.पी. स्वामी (अमहादाबाद-गांधीनगर) पू. शा. मुनि स्वामी, महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी आदि संत मंडल आशीर्वाद दिये थे । पू. कोठारी स्वामी शा. मुनि स्वामीने सभा का संचालन अच्छे से किये थे । इस भगीरथ कार्य में सभी हरिभक्तो ने सेवा दिये थे । प.पू. लालजी महाराजश्रीने कहा कि यह भव्य मंदिर संकुल शीघ्र पूरा हो । ऐसा आशीर्वाद दिये थे ।(कोठारी शा. मुनि स्वामी)

कुडासण श्री स्वामिनारायण मंदिर के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत रात्रि पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा प.पू.स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (अहमदाबाद कालुपुर-गांधीनगर से-२) की प्रेरणा मार्गदर्शन से गांधीनगर के समृद्ध रमणीय क्षेत्र कुडासण में श्री नरनारायणदेव के अन्तर्गत नूतन भव्य श्री स्वामिनारायण मंदिर निर्माण हेतु कुडासण में ता. २७-४-२३ से ३-५-२३ तक श्रीमद् भागवत रात्रिय सप्ताह पारायण पू. स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी के वक्ता पद से पूर्ण किया गया था । कथा के यजमान कुडासण के प.भ. पंकजभाई अरविंदभाई पटेल, प.भ. कमलेशभाई, प.भ. विशालभाई और प.भ. शैलेषभाई नारणभाई (देवडा) आदि परिवार लाभ दिये थे । अन्य सेवा में भी यजमानो ने भाग लिया था ।

संहिता पाठ की सुंदर व्यवस्था की गई थी । ७-५-२३ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे । धामो से संत आकर आशीर्वाद दिये थे । (कोठारी शा. स्वा. नारणमुनिदासजी - कालुपुर-कोटा)

श्री स्वामिनारायण

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

फागण सुद-१/२ प.भ.अ.नि. सोमाभाई हाथीभाई, प.भ.अ.नि. कंकुबेन सोमाभाई पटेल (झुंडाल). **फागण सुद-३** प.भ. खोडाभाई कानजीभाई वसोया (निकोल), प.भ. पटेल शकरीबेन मणीभाई (डेमाई), श्री नरनारायणदेव महिला मंडळ (एप्रोच-बापुनगर). **फागण सुद-४** प.भ. बाबुलाल मणीलाल पटेल (वडु), प.भ.अ.नि. प्रविणचंद्र देवचंदभाई पारे (मुंबई), प.भ. जादवभाई हरिभाई जोगाणी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. साकरबेन प्रागजीभाई, प.भ. चंद्रिकाबेन बळदेवभाई पटेल (करजीसण). **फागण सुद-५** प.भ. राजुल अंकितभाई पटेल (कुंडाळ), प.भ. भूपेन्द्र नटवरलाल भावसार (नवावाडज). **फागण सुद-६** प.भ. ऋषभ चंद्रेश गोर (भुज-कच्छ), प.भ. रतीभाई सोमाभाई पटेल (विद्यानगर). **फागण सुद-७** प.भ. मनहरभाई एन. पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. कैलासबेन डाह्याभाई पटेल (देउसणा), प.भ. पुरीबेन विठ्ठलभाई पटेल (मोखासण), प.भ. पिन्टुकुमार कांतिभाई पटेल (कुडासण), प.भ. पटेल लक्ष्मणभाई मावजीभाई (खांधली), न्यालकरण फार्मा (वडोदरा). **फागण सुद-८** प.भ. जयेन्द्रभाई भोळाभाई पटेल (अहमदाबाद). **फागण सुद-९** प.भ. ईलाबेन चंद्रेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. सीमाबेन केतनभाई पटेल (बायड), प.भ. देव दिगनभाई आचार्य (अहमदाबाद), प.भ. पटेल गीरीशभाई कांतिलाल (भावपुरा). **फागण सुद-१०** प.भ. पटेल मिनाक्षीबेन भद्रेशकुमार (गांधीनगर). **फागण सुद-११** प.भ. चौधरी विष्णुभाई छगनभाई (बालवा), प.भ. दिलीपभाई सोमाभाई ब्रह्मभट्ट (भरूच). **फागण सुद-१२** श्रीहरि प्रसन्नार्थे (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. आशिषभाई भीखाभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. विक्रमभाई ईश्वरभाई पटेल (साबरमती), प.भ.अ.नि. नाथालाल बापुदास पटेल (खरणा), प.भ. पटेल उषाबेन जगदीशभाई, प.भ. जगदीशभाई चिमनभाई (गांधीनगर), प.भ. निलि चांपानेरी परिवार (मुंबई), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ). **फागण सुद-१३** प.भ. पटेल देवज गौरवकुमार (गणेशपुरा), प.भ. मोना संजय पटेल परिवार (नडीयाद), प.भ. मनसुभाई जीवाभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. धीमंत किरीटभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. राजेन्द्रभाई पी. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मितेष लालजीभाई पटेल (अहमदाबाद). **फागण सुद-१४** एक हरिभक्त (कोठंबा), प.भ.अ.नि. राधाबाई विश्राम मेपाणी (सुरजपर-कच्छ), अ.नि. सांख्ययोगी रविकांताबा (लोज), प.भ. चिंतनभाई जयंतभाई शाह (मुंबई), प.भ. केसरबाई मनजी मेपाणी (सुपर-कच्छ). **फागण सुद-१५** प.भ. कुसुमबेन विनुभाई पटेल (अहमदाबाद)

फागण वद-१ प.भ. प्रशांतभाई चंदुभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. मगनभाई मूळजीभाई गाबाणी (खोपाळा), प.भ. कांताबेन कानजी पिंडोरीया (केरा-कच्छ). **फागण वद-२** प.भ. डाह्याभाई शंभुभाई चौधरी (माणेकपुर). **फागण वद-३** प.भ.अ.नि. सुरेशचंद्र घनश्यामप्रसाद जानी (अहमदाबाद), प.भ. दिपककुमार कनैयालाल (राजपुर-कडी), प.भ. चिंतनभाई (मुंबई), प.भ. सुशीलाबेन पटेल (लंडन), प.भ. धनगौरीबेन बाबुलाल सोलंकी (अहमदाबाद). **फागण वद-४** प.भ. दशरथभाई कानजीभाई पटेल (गवाडा), प.भ. जीग्नेशभाई पटेल (सुरत), प.भ. निर्मळाबेन गिरधरलाल पूजारा (अहमदाबाद), प.भ. परिक्षित देवेन्द्रभाई डोडीया (बोपल). **फागण वद-५** प.भ. पटेल परसोतमभाई सोमाभाई, प.भ. पटेल जय हसमुखभाई (नरोडा), प.भ. पटेल बिपीनचंद्र विष्णुभाई (चलोडा), प.भ.अ.नि. मयुरभाई रणछोडभाई साकरीया (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. ब्रिजेशभाई जयंतीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. रमेशभाई धानाणी (अमेरिका). **फागण वद-६** प.भ. केवलभाई महेशभाई पटेल (पोर), प.भ. दिनेशभाई काळुभाई गजेरा (बापुनगर), प.भ. नीताबेन राजुभाई पटेल (डुंगरी), प.भ. केशरबेन रवजी केराई (रामपर-कच्छ). **फागण वद-७** प.भ. चौधरी अमृतभाई वेलाभाई (माणेकपुर), प.भ.अ.नि. कल्याण नारण हिराणी (बळदीया-कच्छ), प.भ. शांति मनजी राघवाणी (बळदीया-कच्छ), प.भ. पटेल योगेशकुमार ईश्वरभाई (कलोल), अ.नि. स्वामी विजयप्रकाशदासजी निमित्ते. **फागण वद-८** प.भ.अ.नि. रसिकभाई लालजीभाई सोलंकी (भुज-कच्छ), प.भ. अर्श जीग्नेशकुमार पटेल, प.भ. मेघजी करशन वरसाणी परिवार (सामत्रा-कच्छ). **फागण वद-९** प.भ. विमळाबेन जीतेन्द्रकुमार कुतीया (भचाउ-कच्छ), प.भ. लल्लुभाई बचुभाई मांगुकिया (बाढडा), प.भ.अ.नि. अमृतलाल लक्ष्मणभाई मीस्त्री (अहमदाबाद), प.भ. नटवरभाई भोळाभाई (भावपुरा). **फागण वद-१०** प.भ.अ.नि. रतनबाई खीमजी वेकरीया (बळदीया-कच्छ), प.भ. पटेल मणीभाई मरघाभाई (उनावा). **फागण वद-११** प.भ. राहुल अने रीयाना जोब-सगाई निमित्ते (राजकोट). **फागण वद-१२/१३** प.भ. क्रिष्णाबेन बिपीनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. पटेल अमृतभाई मगनभाई (डांगरवा), प.भ. अरविंदभाई त्रिकमभाई पटेल (करजीसण), प.भ. प्रिया धीरेन वेकरीया (बळदीया-कच्छ), प.भ. फाल्गुनी तथा सौमील ब्रह्मभट्ट (अहमदाबाद), प.भ. शांताबेन रवजीभाई पटेल (निकोल), प.भ. दिनेशभाई आर. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. नरेश घनश्यामभाई चावडा (चराडवा), प.भ. चंद्रकांतभाई सुंदरजीभाई गोहिल (अहमदाबाद), प.भ. बिपीनचंद्र हिरालाल सोनी (बावळा), प.भ. गोविंदभाई घनश्यामभाई पटेल (करजीसण), प.भ.अ.नि. वाघजीभाई माधवदास पटेल (वडदला), प.भ. भगवतीबेन ठक्कर परिवार, प.भ. पटेल ज्योत्सनाबेन भीखाभाई (वडु), प.भ. विनोदचंद्र डी. पटेल (कपडवंज), प.भ. शशीकांत प्रभाशंकर व्यास (गांधीनगर), प.भ.अ.नि. चंद्रिकाबेन वासुदेवभाई खीचडीया (सुरत), प.भ.अ.नि. भीखालाल अंबालाल भावसार (अहमदाबाद), प.भ. पटेल राजेशभाई शिवलालभाई (बजाणा). **फागण वद-१४** प.भ. करशनभाई भीमजीभाई जेसाणी सह परिवार (दहींसरा-कच्छ), प.भ.अ.नि. रामजीभाई भीमजीभाई भंडेरी सह परिवार (दहींसरा-कच्छ). **फागण वद-३०** प.भ.अ.नि. धनुबेन नरसिंहभाई, प.भ.अ.नि. सुभद्राबेन घनश्यामभाई पटेल (नांदोल), प.भ. रणछोडभाई माणेकलाल (नारायणपुरा), प.भ.अ.नि. अमृतभाई लवजीभाई चौधरी (बालवा).

चैत्र सुद-१ प.भ. प्रमोदभाई बिहारीलाल पारे (हैद्राबाद), श्रीहरि प्रसन्नार्थे (गांधीनगर), प.भ. कृष्णकुमार वाडीलालभाई (मोतीपुरा), प.भ. नारणभाई कुंवरजीभाई पिंडोरीया (माधापर-कच्छ). **चैत्र सुद-२** प.भ. पटेल पार्थ अतुलकुमार (बापुनगर), प.भ. बिजल पार्थ पटेल (अहमदाबाद). **चैत्र सुद-३** प.भ. वरसाणी केशरा रत्ना कोडकी (भवानीपुर-कच्छ). **चैत्र सुद-४** प.भ. उर्मिलाबेन महेशभाई पंचाल (मुंबई), प.भ. भैराराम तथा नरींगाराम समथारामजी (वाली-राज.), प.भ. दिलीपभाई बाबुभाई पटेल (विहारवाळा), प.भ. निलेश गोविंदभाई पटेल (सिंगरवा). **चैत्र सुद-५** प.भ.

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

परेशभाई नाथाभाई देसाई (ओळीया), प.भ.अ.नि. कांताबेन डाह्याभाई पटेल (चांदेडा), श्री कोर्पोरेशन (अहमदाबाद), प.भ. ध्रुविल पटेल (बापुनगर), प.भ.अ.नि. किरीटभाई डाह्याभाई पटेल (मोखासण). **चैत्र सुद-६** प.भ. ख्याति नरेश देवाणी (हैद्राबाद). **चैत्र सुद-७** प.भ. गीताबेन बळवंतभाई मेतलीया (मुंबई), प.भ. ध्यान मितेष लालजी पिंडोरीया (नारायणपर-कच्छ), सांख्ययोगी मयुरीबा (हवेली-कालुपुर). **चैत्र सुद-८** प.भ. वालजी करशन हिराणी परिवार (बळदीया-कच्छ). **चैत्र सुद-१०** प.भ. नेहा कांतिभाई खीमाणी (दहींसरा-कच्छ), प.भ. गीताबेन हरजीभाई हालाई (भुज-कच्छ), प.भ. विवेक अने मनन जोबनपुत्रा (राजकोट), प.भ.अ.नि. डॉ. पार्थ गीरीशभाई पटेल (लवारपुर), प.भ. रणजीतभाई ठाकोर (अहमदाबाद), श्री बाल स्वरूपश्री घनश्याम महाराज प्रसन्नार्थे (अहमदाबाद). **चैत्र सुद-१२** प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. गोपालभाई गोरेचा (केशोद), प.भ. शैलेषभाई देवराजभाई काकडीया (चांदेडा), प.भ. भक्तिभाई शिवदास पटेल (वडुवाळा), प.भ.अ.नि. भरतभाई लक्ष्मीचंद ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. मानसी जैमिककुमार पटेल (मोटेरा), प.भ. अरूणाबेन चंद्रकान्तभाई बेलाणी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. निरूपमा श्रीनिवास परिवार (अहमदाबाद), प.भ. भरतभाई जोधाणी (निकोल), प.भ.अ.नि. रोहितभाई डाह्याभाई पटेल (खेरवा), प.भ. चंपाबेन केशुभाई महिला मंडळ (निकोल), सद्. पू. ब्रह्मानंद स्वामी प्रसन्नार्थे (अहमदाबाद), प.भ. ज्योत्सनाबेन अरविंदभाई डाभी (अहमदाबाद), प.भ. सुरेशभाई अंबालाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. पुनाभाई रवजीभाई वेकरीया (सुरत), प.भ.अ.नि. वेलजीभाई टपुभाई टांक (सेलवास), प.भ.अ.नि. लालजी विसराम भुडिया (केरा-कच्छ), प.भ. गोपाल रत्ना हिराणी (सुरजपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. वासुदेवभाई गज्जर (अहमदाबाद), प.भ. पटेल विजयभाई हरमानभाई (मानकुवा). **चैत्र सुद-१३** प.भ.अ.नि. केशरबेन परबत भुडिया (केरा-कच्छ), अ.नि. पूज्य स.गु. पुराणी स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी (स्वा. मंदिर भुज). **चैत्र सुद-१४** प.भ. मेनाबेन प्रह्लादभाई (वडु), प.भ.अ.नि. रवजीभाई हरजीभाई (वाडासर-कच्छ). **चैत्र सुद-१५** प.भ. हंसाबेन ककलभाई पटेल, अ.नि. सद्. स्वामी नारायणप्रसाददासजीनी पुण्य तिथि निमित्ते (अहमदाबाद), प.भ. धर्मेन्द्रभाई रवजीभाई जेसाणी (बळदीया-कच्छ), प.भ. अक्षय रमेशभाई हिराणी (कोडकी-कच्छ).

चैत्र वद-१ प.भ. हरजी करशन वेकरीया सह परिवार (बळदीया-कच्छ), प.भ.अ.नि. डाह्यालाल जेठालाल राधनपुरा (राजकोट), प.भ.अ.नि. धनजी प्रेमजी हालाई (कोडकी-कच्छ). **चैत्र वद-२** प.भ. आकाश हरेशकुमार मोदी (अहमदाबाद), प.भ. जयंती हिरजी गोरसीया (सुपर-कच्छ), प.भ. भीमजी रवजी मेघजी वेकरीया (बळदीया-कच्छ). **चैत्र वद-३** प.भ. ईश्वरभाई परसोतमदास पटेल (प्रांतिया), प.भ. अर्चनाबेन हिरेनकुमार बारैया, प.भ. अमृतभाई जेठाभाई पटेल (सापावाडा), प.भ.अ.नि. काशीबेन मणीभाई पटेल (पोर), भक्ति महिला मंडळ (राजस्थळी) (सुरत), प.भ. चौधरी राजुभाई गोविंदभाई (बालवा), प.भ. सोमचंदभाई रामजीभाई कोटक (अहमदाबाद). **चैत्र वद-४** प.भ. अरविंद मावजी वेकरीया (बळदीया-कच्छ), प.भ. कानजी मनजी पिंडोरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. प्रियाबाई, मयुरीबाई, प्रियलबाई (भुज-कच्छ), प.भ. हस्मिता महेन्द्र कारा (मांडवी-कच्छ). **चैत्र वद-५/६** प.भ.अ.नि. पुष्पाबेन अरविंदभाई गांगाणी (अहमदाबाद), प.भ. रत्ना प्रेमजी भुडीया सह परिवार (सुरजपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. धीरजबेन मधुसुदन पटेल (महेळाव). **चैत्र वद-७** प.भ. नानजीभाई कानजीभाई आसाणी (दहींसरा-कच्छ), प.भ.अ.नि. चंदुलाल त्रिकमलाल पटेल (जमीयतपुरा), पूज्यश्री बिन्दुराजा (अहमदाबाद स्वा. बाग), प.भ. प.भ. गीताबेन भूपतभाई जोबनपुत्रा (राजकोट). **चैत्र वद-८** प.भ. जय शिवजी राबडीया (मांडवी-कच्छ). **चैत्र वद-९** प.भ. कृणाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. दिव्येश वेकरीया (भुज-कच्छ). **चैत्र वद-१०** प.भ. राजुभाई विठ्ठलदास पटेल (मोखासण), प.भ. मावजी कानजी हिराणी (मानकुवा-कच्छ). **चैत्र वद-१२** प.भ. जादवा रामजी खेताणी सह परिवार (सुपर-कच्छ), प.भ. वेलजी करशन, देवीबेन वेलजी कारा (कच्छ), प.भ. तासी किशन, रमेश खेताणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. सुरेशभाई बचुभाई पटेल (सुरेन्द्रनगर), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. रमेशचंद्र कुबेरदास (मालवण), प.भ.अ.नि. पंकजभाई कांतिलाल पटेल (ईटादरा), प.भ. डॉ. मनीषभाई देवचंदभाई (शिरोही), प.भ. किया विकाशकुमार (साचोदर), प.भ. शिखा अल्पेश पिंडोरिया परिवार (सरली-कच्छ), भुजधाम श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी महोत्सव निमित्ते - ह. प.भ. भावसारभाई, प.भ. पोपटभाई वेलजीभाई चौधरी कोठारी (सोलैया), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. निर्वान पियुषभाई सेलडीया, प.भ. देवसी प्रेमजी राधवाणी (बळदीया-कच्छ), प.भ. हर्षकुमार भरतभाई पटेल (गांधीनगर). **चैत्र वद-१३** प.भ.अ.नि. हंसाबेन सूर्यकांत (उंझा), प.भ. नयनकुमार दशरथभाई (डुंगरी). **चैत्र वद-१४** प.भ. नागजीभाई चंदुभाई सोरठीया (अहमदाबाद). **चैत्र वद-३०** प.भ. जयपालसिंह जसुभा झाला (गांधीनगर).

अक्षरनिवासी संतो को श्रध्धांजलि

मेहसाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर के स.गु. शास्त्री स्वामी उत्तमप्रियदासजी गुरु स.गु. स्वामी कृष्णकेशवदासजी (उम्र ७८ वर्ष) श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए। ता. २६-०४-२०२३ के दिन अक्षरनिवासी हुए थे।

जमीयतपुरा श्रीप्रभा हनुमानजी मंदिर के स.गु. घनश्याम स्वामी (ब्रह्मचारी) ता. २९-०४-२०२३ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए थे।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

चांदीसणा गाँव में पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. लालजी महराजश्री ।

आर.सी. टेक्निकल (घाटलोडिया) मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

जीवराजपार्क मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर अन्नकूट की आरती उतारते तथा सभा को आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

जडेश्वरपार्क श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव के अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

कडी अनमोल वीला नूतन मंदिर हेतु रामकथा के अवसर पर सभा को आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

पूनम के दिन ठाकुरजी का थाल, संत भक्त रसोई और कथा के यजमान

प.भ.श्री संजयभाई रमणभाई शंकरभाई पटेल -
प.भ. श्री जीगर विक्रमभाई पटेल -
प.भ. श्री भाविक संजयभाई पटेल
(श्रीरामदास बापा परिवार -उनावा)

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

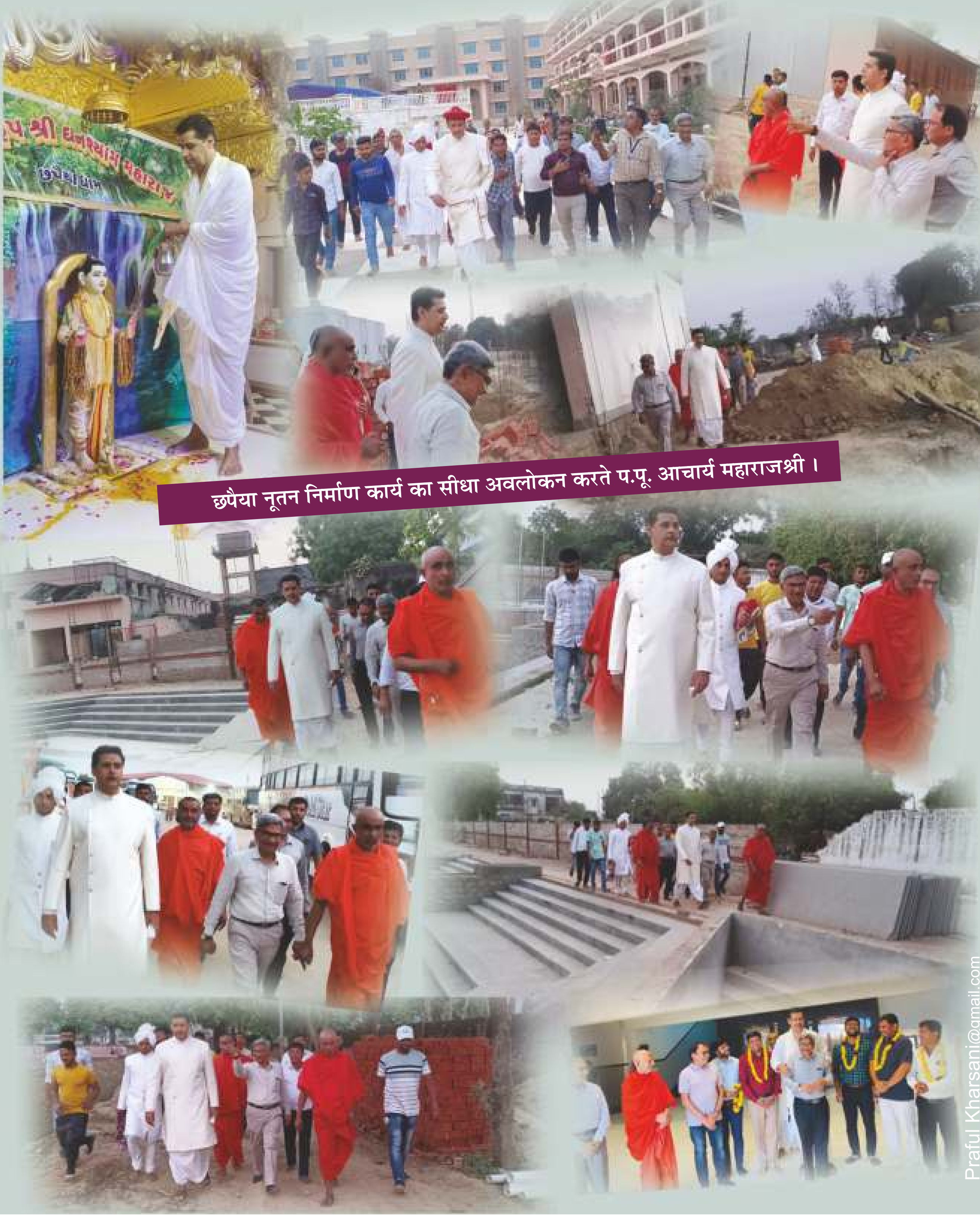

छपैया नूतन निर्माण कार्य का सीधा अवलोकन करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

Praful Kharsani@gmail.com